''डिहरी–डालमिया नगर शहर का पारिवारिक संरचना''

डॉ० संजय कुमार*

डिहरी–डालमिया नगर शहर सोन नदी के तट पर अवस्थित है। यह शहर 14,092 वर्ग किलोमीटर में फैला हुआ है। इस शहर के उत्तर में वृहद रोहतास उद्योग पुंज और दक्षिण में वी० एम० पी० का कन्टोन्मेंट हैं। पूरब तरफ सोनमद्र नही तथा पश्चिम कोल डिपो अवस्थित है।

डिलरी–डालमिया नगर की पारिवारिक संरचना की चर्चा करने के पूर्व परिवार के अर्थ थी चर्चा करना आवश्यक है। परिवार समाज की बुनियादी इकाई है। यह सभी संस्थाओं की आधारभूत संस्था है। मैकाइवर एवं पेज ने कहा है ''परिवार पर्याप्त निश्चित यौन–सम्बन्ध पर आधारित एक ऐसा समूह है जो बच्चों की उत्पत्ति एवं लालन–पोषण की व्यवस्था करता है।'' लूसी मेचर के अनुसार ''परिवार एक गार्डस्थ समूह है जिसमें माता–पिता और उनकी सन्ताने साथ–साथ रहती है। इसके इसके मूल रूप में दम्पत्ति और उसकी संतान रहती है।'' इन दोनों परिभाषाओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि परिवार जैवकीय सम्बन्धों पर आधारित एक प्राथमिक सामाजिक समूह है जिसमें माता–पिता और बच्चे होते हैं तथा जिनका उद्देश्य सदस्यों के लिए सामान्य निवास, आर्थिक सहयोग यौन–संतुष्टि और प्रजनन, समाजीकरण और शिक्षण, आदि सुविधाएँ जुटानी है।

डिहरी– डालमिया नगर शहर की परिवारिक संरचना का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि इस शहर की सामाजिक संरचना में चद्यपि परिवार पितृसत्तात्मक होते हैं परन्तु इस नगर में पितृसत्तात्मक के ये अधिकार छीन गये हैं। पिता परिवार का वैधानिक मुखिया है। उसकी तुलना ऊँलैंड के राजा से की जा सकती है। इस नगर के परिवार का मुखिया वैधानिक अधिकारी है न कि निरकुंश पितृसत्ता का। आधुनिक कानूनों के अनुसार स्त्रियों तथा बच्चों को अनेक अधिकार प्राप्त हो गये हैं। बच्चों पर माता–पिता तथा पिता दोनों का समान अधिकार होता है। महिलाओं की सामाजिक स्थिति ऊँची होती जा रही है। पुरूष तथा स्त्री की स्थिति परिवार में समान होती है। समसत्तात्मक परिवार भी डिहरी– डालमिया नगर के

***एम०ए०,पी–एच०डी० (समाजशास्त्र) ग्राम–रामपुर, पो०–पेनार (रोहतास)**

शहर में पाये जाते हैं। इस शहर में बच्चों की शक्ति भी बढ़ती जा रही है। मउिरर ने उचित ही लिखा है, ''वास्तव में वे परिस्थितियों में प्रबलता प्राप्त करने की ओर ध्यान देते हैं, उनकी इच्छाएँ परिवार की नीति को निश्चित करती है। अतः झूकाव सन्तानात्मक परिवार की ओर है जिसमें बच्चा प्रबल कार्य करता है।''(1) यदि बच्चों की शक्ति इसी प्रकार बढ़ती रहे तो शीध्र ही डिहरी–डालमिया नगर शहर की परिवार सन्तानात्मक परिवार हो जायेगा।

डिहरी–डालमिया नगर शहर के परिवार के आकार में ह्रास हो रहा है। इस सहर में छोटे आकार के परिवार पाये जाते हैं। पति पत्नी तथा बच्चों के अतिरिक्त अन्य सम्बन्धी बहुत कम रहते हैं। अधिकतर नवविनाहित– युग्म अपने सास– ससुर के साथ रहना पसंद नहीं करते हैं । इस शहर के लोग एकांकी परिवार को अच्छा मानते हैं तथा इसके लिए परिवार नियोजन के साधनों का उपयोग करते हैं।

डिहरी–डालमियानागर शहर में परिवार अस्थायी होता है। यहाँ सामाजिक गतिशीलता अत्यधिक है। इसके फलस्वरूप परिवार एक स्थान से दूसरे स्थान को जाते रहते हैं। यहाँ विवाह शीध्रता में होता है तथा विवाह विच्छेद भी देखने को मिलता है। इस शहर में विवाह विच्छेद को स्वीकार कर लिया है।डिहरी–डालमिया नगर शहर में प्रेम विवाह अधिक समय तक निरन्तर नहीं रह पाते। इस कारण भी इस शहर में विवाह विच्छेद की घटना घटती रहती है।

डिहरी–डालमिया नगर शहर में परिवार के लिए घर नाम की वस्तु कोई महत्त्व नहीं रखती। लोग किराये के मकानों तथा होटलों में रहना अधिक पसंद करते हैं।

डिहरी– डालमिया नगर शहर में परिवार के लिए नातेदारी का अधिक महत्त्व नहीं है। लोग अपने रिश्तेदारों से अधिक सम्बन्ध नहीं रखते । ग्रामाँ में व्यक्ति अपनी सामाजिक स्थिति को निश्चित करने के लिए अपने रिश्तेदारों का पूर्ण विवरण दिया करता है। यहाँ परिवार उसकी समाजिक स्थिति निश्चित करता है, लेकिन डोरी–डालमिया नगर शहर परिवार का इस दृष्टि से कोई महत्त्व नहीं हैं। इस नगर के लोग अपने कार्य एवं योग्यता द्वारा अपनी सामाजिक स्थिति को प्राप्त करता है। इन कारणों के फलस्वरूप इस शहर में नातेदारी का महत्त्व कम होता जा रहा है। इस शहर के लोग यह मानकर चलते हैं कि नातेदारी रूढ़िवादिता से परिपूर्ण होती है। इससे सामाजिक नियंत्रण की संभावना अधिक होती है। इसलिए

डिहरी–डालमिया नगा जैसे शहर में स्वच्छन्द्र प्रकृति का व्यक्ति इसके बचने की चेष्टा में रहता है।

डिहरी–डालमिया नगर शहर में स्त्रियों की स्थिति में परिवर्तन हो रहा है। इस शहर में स्त्री के अधिकार परिवार मेतं अधिक हैं। कुछ देशों में तो महिलाओं

के अधिकार इतने बढ़ गये हैं कि लोगों को संदेह है कि निकट भविष्य में परिवार मातृसत्तात्मक न बन जाय। इस शहर के अनेक परिवारों में पति परिवार का मुखिया नहीं है। अब पारिवारिक दायरे में उस निरकुंश राजा के समान भी नही रहा, जिसके शब्द ही विधि हों। पत्नी पारिवारिक दायरे में अपने आपकों पति से उच्चतर नहीं तो पूर्णतः समान अवश्य समझती है। वह पारिवारिक समूह के भाग्य को सहानुमूतिपूर्वक नियंत्रण करती है लेकिन अल्प प्रतिज्ञ व्यक्ति की तरह नहीं। वह दास वृति करने वाली गुलाम नहीं है। जहाँ तक बच्चों का प्रश्न है पिता से अधिक उसकी (माता की) अज्ञाओं पर ध्यान दिया जाता है।(2) स्पष्ट है कि परिवार में महिलाओं ने आर्थिक स्वतंत्रता के साथ–साथ सामाजिक तथा राजनैतिक शक्ति को भी प्राप्त किया है। इसके फलस्वरूप परिवार में उनकी स्थिति उच्च है।

डिहरी–डालमिया नगर शहर में औद्योगिक क्रांति के फलस्वरूप विवाहित हो गया है। आर्थिक आवश्यकताएँ भी इतनी बढ़ गयी है कि साधारण परिवारों को आमदनी पूरी नहीं पड़ती। इन कारणों से साधारण डिहरी– डालमिया नगर शहर के परिवार की महिलाओं के लिए यह अनिवार्य हो गया है। और उन्हें बाहर कार्य करना पड़ रहा है। कुछ स्त्रियाँ जो उच्च शिक्षा प्राप्त है तथा जिन्हें नौकरी इत्यादि की सुविधा प्राप्त है वे अन्य वाहरी कार्यों में अपना समय व्यतीत करती है। उदाहरण के लिए सामाजिक गतिविधियों जैसे महिला समिति, ताश खेलना, चाय पार्टी, राजनीतिक गतिविधियाँ सामाजिक सेवा कार्य, अन्य परमार्थिक तथा धार्मिक कार्य तथा कला एवं साहित्यिक गतिविधियाँ आदि इन सबसे इन शहर के परिवार में महिलाओं की स्थिति एवं कार्यों मेतं महान परिवर्तन दिखाई देता है। महिलाएँ स्वतंत्रता रूप में सार्वजनिक जीवन में माग ले सकती है। वे घर के पिंजरे में बंद रहने वाली चिड़ियाएँ नहीं है। डिहरी–डालमिया नगर शहर का परिवार अनेक समस्याओं से ग्रस्त है। जिनमें पारिवारिक तनाव, विवाह विच्छेद, माता–पिता एवं संतानों का संघर्ष, सन्तानों के पालन–पोषण की समस्याएँ सुरक्षा का अभाव, पारस्परिक विश्वास में कमी, न्यून जन्म दर शामिल है।

डिहरी–डालमिया नगा के शहर में पुरानी परम्परा के अनुसार परिवारों का रह पाना प्रतित होता है क्योंकि आधुनिक समय मेतं ग्रीव एवं मौलिक परिवर्तन हो रहे हैं। पुरानी परम्परा कृषि के अनुसार है। नगरीय परम्परा में और ग्रामीण परम्परा में परस्पर गहरा विरोध है। स्वाभाविक है कि औद्योगिकी तथा नगरीय समाजों में परिवार के नये प्रतिमान विकसित होगें। डिहरी–डालमिया नगर के शहर में परम्परागत परिवार के मौलिक कार्य करने वाली अनेक संस्थाओं का प्रचलन है। इससे परिवार की कोई विशेष आवश्यकता अनुभव नहीं होती। विशेष रूप से उस शहर में आज संयुक्त परिवार का तो कोई औयित्य प्रगित नहीं होता।

संदर्भ सूची :

1. Ernest R. Mowerer : the Family, wniversity or chicago press, (1932) .
2. K.M. kapadia : Marriage and Family in India, oxtord wniversity, culcutta
3. Andarson and kshwarn K. (1965) :
4. Wrban socialogy, Asia, phblishing House, Bombay, 1965 .
5. Bergel, E.E. (1955) A wrban Socialogy, Mcgraw Hillbook comp. Inc., Newyonk
6. Bijlani, H.W. (1977) : wrban problems, Indians Instithte or phblic Administration, New Delhi .